# आरती श्री गंगा जी की (२)

जय गंगा मैया मां जय सुरसरि मैया,
भवबारिधि उद्धारिणि अतिहि सुदृढ़ नैया ।
हरि पद पदम प्रसुता विमल वारिधारा,
ब्रह्मदेव भागीरथि शुचि पुण्यगारा ।
शंकर जटा विहारिणि हारिणि त्रय तापा,
सगर पुत्र गण तारिणि हरिणि सकल पापा ।
गंगा गंगा जो जन उच्चारत मुखसों,
दूर देश में स्थित भी तुरत तरन सुखसों ।
मृत की अस्थि तनिक तुव जल धारा पावै,
सो जन पावन होकर परम धाम जावै ।
तट तटवासी तरुवर जल थल चरप्राणी,
पक्षी पशु पतंग गति पावैं निर्वाणी ।
मातृ! दयामयि कीजै दीनन पर दाया,
प्रभु पद-पद्म मिलाकर हरि लीजै माया ।

## विवरण

वह नदी की धारा जो देवी के रूप में प्रवर्तित होती हैं, ऐसी गंगा मइया की जय हो । जो हमें जन्म - मरण के क्रम से उबारती हैं, ऐसी सबका बेड़ा पार करने वाली गंगा मइया हमारी बड़ी ही दृढ़ नैया बनकर हमें इस नश्वर संसार से पार लगाती हैं ।

आप ब्रह्म देव एवं भागीरथी की अत्यन्त स्वच्छ एवं धर्म विहित गंगा मइया हैं । आप शंकर जी की जटा में विहार करती रहती हैं तथा हमारे सभी पाप - दोषों का नाश करती रहती हैं । आपने सर्व पापों से मुक्त करके सगर के सभी पुत्रों को तार दिया ।

जो अपने मुख से आपके नाम का उच्चारण करता रहता है, वह आपसे

दूर ही क्यों न हो परन्तु फिर भी आप उसे तार कर सुख का अनुभव कराती हैं । मनुष्य के मरे हुए शरीर की हड्डियों को भी आपके निर्मल जल का स्पर्श करा दिया जाय तो वह पवित्र होकर भगवान के परम पद को प्राप्त कर लेता है ।

आपका तट एवं आपके तट पर रहने वाले लोग तथा जमीन एवं जगत के सभी सजीव एवं निर्जीव प्राणी,पशु,पक्षी,कीट-पतंग को भी आप अपने जल का स्पर्श कराकर उन्हें निवृत्त कर देती हैं । हे गंगा मइया ! हम गरीब एवं दुखी लोगों पर कृपा कीजिए तथा हमारे सभी मोह माया का भंग करके हमें प्रभु के पद
प्राप्त करा दीजिए ।

---

**visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions**.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.